१७ के बाद
२४ ता० की मुरली ~~आवाज में~~

✓ प्रातः क्लास 25-12-68 ओमशान्ति पिताशिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। बच्चे समझते हैं हम बहुत बेसमझ बन गये थे। माया रावण ने बेसमझ बना दिया था, हम देवता से बन्दरबन पड़े थे। मनुष्य को बन्दरबुद्धि कहा जाता है। यह भी बच्चे समझते हैं बाप को जरूर आना ही है जब कि नई दुनिया की स्थापना होती है। तीन चित्र भी है ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना, शंकर द्वारा विनाश। क्योंकि करनकरावनहार है ना। एक है जो करता है और कराता है। पहले किसका नाम आयेगा। जो करता है, फिर जिस द्वारा कराते हैं। करनकरावनहार कहा जाता है। ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना कराते हैं। यह भी बच्चे जानते हैं हमारी जो नई दुनिया है जो हम स्थापन कर रहे हैं। उसका नाम ही है देवी देवताओं की दुनिया। सतयुग में ही देवी देवतायें होते हैं। और कोई को देवी देवता नहीं कहा जाता है। वहां मनुष्य होते ही नहीं। है एक ही देवी देवता धर्म। दूसरा कोई धर्म है नहीं। अभी तुम बच्चों को स्मृति आई है। बराबर हम देवी देवतायें थे। निशानियां भी हैं। इस्लामी बौधी क्रिश्चन आदि सभी अनी2 निशानी है। हमारा जब राज्य था तो और कोई नहीं था। फिर और सभी धर्म है तो देवी देवता धर्म नहीं हैं। गीता में अक्षर बड़े अच्छे2 हैं। परन्तु कोई समझ नहीं सकते हैं। बाबा कहते हैं विनाश काले विप्रित बुधि और विनाश काले प्रीत बुधि। विनाश तो इस समय ही होता है। बाप आते भी हैं संगम पर जब कि दुनिया चेंज होती है। बाप तुम बच्चों को बदली में सभी कुछ नया देते हैं। वह सोनार भी है धोबी भी है। बड़ा व्यवापरी भी है। किसी कोई बाबा से व्यापार करे। इस व्यापार में तो अथाह फायदा है। पढ़ाई में बहुत फायदा होता है। महिमा भी की जाती है पढ़ाई कमाई है। नालेज है सोर्स आफ इनकम। बाप कहते हैं मैं तुमको पढ़ाता हूं। इसमें तुमको अथाह कमाई है। सो भी जन्म जन्मान्तर के लिये कमाई है। तो ऐसी पढ़ाई अच्छी रीत पढ़नी चाहिए। और बहुत सहज पढ़ाता हूं। सिर्फ एक ही हफ्ता समझो। फिर भल कहां भी जाओ। तुम्हारे पास पढ़ाई आती रहेगी। अर्थात ~~मुरली~~ मुरली मिलती रहेगी तो फिर कब लींक नहीं टूटेगी। यह है आत्माओं और परमात्मा का लींक। गीता में भी यह अक्षर है। विनाश काले विप्रीत बुधि विनश्यन्ति। प्रीतबुधि विजयन्ति। तुम जानते हो यह सभी जंगली जानवर है। एक दो को मारते काटते ही रहते हैं। इन जैसा क्रोध विकार और कोई में होता नहीं। यह भी गायन है द्रौपदी ने पुकारा। बाप ने समझाया है तुम सभी द्रौपदियां हो और पुरुष हैं सभी दुशासन। द्रौपदी ने पुकारा कि हमको नंगन करते हैं। बाप समझाते हैं ऐसे2 अत्याचारी थे। जिनको जानवर से भी बदतर कहा जाता है। गऊ एक ही बार बैल के पास जाती है ना। - - - - - - - - - - - - - - - - - - फिर कब बैल की बारी में आवेंगे ही नहीं। बैल के सामने कब आवेंगे ही नहीं। लड़ पड़ेंगे। यहां मनुष्य देखो कितने गंदे हैं। इसलिये द्रौपदी ने पुकारा है मुझे नगन करते हैं। जुआ की बात है ना। दुशासन मुझे नंगन करते हैं। मैं रजोस्वाला हूं मुझे हाथ न लगाओ। मुझे नंगन न करो। यहां के मनुष्य ऐसे हैं जो भूल कुछ भी हो तो भी काला मुंह करने बिगर रहेंगे नहीं। जानवरों से भी बदतर हैं। सतयुग में तो नंगन होने का हुकुम ही नहीं। इस समय है घोर अंधियारा। बाप देख रहे हैं कितना गंदे है। कामी कुत्ते छोड़ते ही नहीं। कहते हैं हम ऐसे हैं तो भी नंगन करते हैं। उनके पास ज्ञान है तब ही पुकारती है। बड़े गन्दे मनुष्य हैं। तुम भी समझ सकते हो बराबर ऐसे है ना। भगवानुवाच बाप कहते हैं बच्चे अभी विकार में मत जाओ। मैं तुमको स्वर्ग में ले चलता हूं। तुम सिर्फ मुझे याद करो। अभी विनाश काले है ना। किसके भी सुनते नहीं हैं। लड़ते ही रहते हैं। कितना उनको कहते हैं शान्त करो। यह खुशी मनाने का समय है। परन्तु शान्त करते ही नहीं। अपने बच्चों आदि से विछुड़ कर लड़ाई के मैदान में जाते हैं। कितने मनुष्य मरते हैं। कोई वैल्यु नहीं। मनुष्य की अगर वैल्यु है महिमा है तो इन देवी देवताओं की। अभी तुम यह बनने लिये पुरुषार्थ कर रहे हो। तुम्हारी महिमा वास्तव में इन देवताओं से भी जास्ती है। तुमको अभी बापू पढ़ा रहे हैं। तुम समझते हो हम स्टुडन्ट हैं। कितनी ऊंच पढ़ाई है। ~~पढ़ने~~ पढ़ने वाले कितने नीचे तमोप्रधान हैं। तुम बहुत - - - - - -

जन्मों के अन्त में बिल्कुल ही तमोप्रधान हो। मैं तो सदैव सतोप्रधान ही हूं। मैं तो बच्चों का औबीडियन्ट सर्वेन्ट बनकर आया हूं। विचार करो हम कितने छी छी बन गये हैं। बाप हमको कितना वाह वाह बनाते हैं। भगवान बैठ मेहतरों को पढ़ाते हैं। कितना उंच बनाते हैं। बाप खुद कहते हैं मैं बहुत जन्मों के अन्त में आया हूं। तुम सभी को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने आया हूं। अभी तुमको पढ़ा रहा हूं। तुम मेहतरों गोबर करने वालों में कोई समझ नहीं हैं। घमंड अपना कितना है। कितने क्रोधी होते हैं। बाप कहते हैं इन साधुओं का भी उधार करने मुझे आना पड़ता है। इसलिये यह भीलगा हुआ है जो अपने को ईश्वर कहलाते हैं वह हिरण्यकश्यिप जैसे दैत्य है। तुम्हारा एक गीत भी है साधु सन्त महात्मा अक्षर बेमाना, मेहतर उन से बेहतर जो खाते मेहनत का खाना। यह मेहतर न हो तो कितना गंद हो जाये। साधु सन्त आदि न हो तो उन्हों बिगर कुछ होगा क्या। यह तो और ही पतित बनाते हैं। बाप कहते हैं मैं ने तुमको स्वर्गवासी बनाया फिर तुम नर्कवासी कैसे बने। किसने बनाया। जो अपने को ईश्वर कहते हैं वह तो बड़े2 ते बड़े बेवकुफ ठहरे। मुझे गालीभी देते हैं। सभी को गिराते भी हैं। कह देते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है। गायन भी है विनाश काले विप्रीत बुधि विनश्यन्ति। प्रीत बुधि विजयन्ति। फिर जितना2 प्रीत बुधि रहेंगे अर्थात बहुत याद करेंगे तुम्हारा ही उतना फायदा है। लड़ाई का मैदान है ना। साधु सन्त आदि यह नहीं जानते गीता में कौन सीधु युध बताई है' उन्हों ने फिर कौरवों और पाण्डवों की युध बैठ दिखाई है। कौर वसम्प्रदाय पाण्डव सम्प्रदाय भीहैं। परन्तु युध तो कोई नहीं। पाण्डव उनको कहा जाता है जो बाप को जानते हैं। बाप से प्रीत बुधि हैं। कौरवउनको कहा जाता है जो बाप से विप्रीत बुधि है। बाप को गाली देते रहते हैं। अक्षर तो बहुत अच्छे2 समझने लायक हैं। अभी है संगम। तुम जानते हो नई दुनिया की स्थापना हो रही है। बुधि से काम लेना है। अभी दुनिया कितनी बड़ी है। सतयुग में कितने थोड़े मनुष्य होंगे। छोटा झाड़ होगा ना। वह झाड़ फिर बड़ा होता है। मनुष्य सृष्टि रूपी यह उल्टा झाड़ कैसी है यह भी कोई समझते नहीं हैं। इनको कल्प वृष भी कहा जाता है। बृक्ष का नालेज भी चाहिए ना। और बृक्ष का नालेज तो बहुत सहज है। झट बता देंगे। इस बृक्ष का नालेज भी ऐसा सहज है परन्तु है यह ह्युमन बृक्ष। मनुष्यों को अपने बृक्ष का पता नहीं पड़ता। कहते भी हैं गाड ईज क्रियटर। तो जरूर चैतन्य है ना। बाप सत्य है चैतन्य है ज्ञान का सागर है। उनमें कौन सा ज्ञान है यह भी कोई नहीं समझते हैं। बाप ही बीज रूप चैतन्य है। उनसे ही सारीरचना होती है। तो बाप बैठ समझाते हैं मनुष्यों को अपने झाड़ का पता नहीं हैं। और झाड़ों की अच्छी रीत जानते हैं। झाड़ का बीज अगर चैतन्य होता तो बतलाता ना। परन्तु वह तो जड़ है। तो अभी तुम बच्चे ही रचयिता और रचना के राज को जानते हो। रचयिता बाप को सर्वव्यापी थोड़ेही कहेंगे। और जो आम होते हैं उनका बीज तो व्यापक है जो लगाया जाता है। और झाड़ निकलता है। वह है जड़। यह तो चैतन्य है। सत है चैतन्य है ज्ञान का सागर है। चैतन्य में तो बात चित कर सकते हैं ना। मनुष्य का तन सबसे उंच अमूल्य गिना जाता है। इनका मूल्य कथन नहीं कर सकते। बाबा आकर आत्माओं को समझाते हैं। तुम रूप भी हो बसंत भी हो। बाप है ज्ञान का सागर। उनसे तुमको रत्न मिलते हैं। यह ज्ञान रत्न है। जिस रत्नों से वहरत्न भी तुमको ढेर मिल जाते हैं। ल0ना0 को देखो कितने रत्न हैं। हीरे जवाहरों के महलों में रहते हैं। नाम ही है स्वर्ग। जिसके तुम मालिक बनने वाले हो। कोई गरीब को अचानक बड़ा लाटरी मिलती है तो चर्ये हो जाते हैं ना। बाप भी कहते हैं माया तुमको बिल्कुल ही चर्या बना देती है। माया आधा कल्प लिये जीत पा लेती है। तुमको आगे चल बतावेंगेमाया कितने अच्छे2 महारथीयों को हप कर लेती है। एकदम गा लेती है। कहते हैं ना खुदा को छू करे बस गये कि गये। तुमने सर्प को देखा है ना मेढक को कैसे पकड़ता है। जैसे गज को ग्राह हप करते हैं ना। सर्प मेढक को एकदम सारा ही हप कर लेती है। मेढक जबकुदता है तो सर्प उनको पकड़ता है। यहां से जैसे गोरा दिखाई पड़ता है। माया भी ऐसी है। बच्चों को जीते जी पकड़ते2

27-12-67

3

एकदम खत्म कर देती है। जो फिर कब बाप का नाम भी नहीं लेते। फिर गठर मे जाकर पड़ते हैं। योगबल की ताकत तुम्हारे में बहुत कम है। सारा मदार योगबल पर है। जैसे सर्प मेढक को हप करता है, तुम बच्चे भी सारी बादशाही को हप करते हो। सारी विश्व की बादशाही तुम ले लेंगे चुपके से। बाप कितना सहज युक्ति बताते हैं। कोई हथियार आदि नहीं। बाप ज्ञान की अस्त्र शस्त्र देते हैं। उन्होंने फिर स्थूल हथियार आदि दे दिया है। गीता मे ही उल्टा कर दिया है। तमोप्रधान होने कारण गीता को भी तमोप्रधान बना दिया है। फिर थोड़ा कुछ रह जाता है तब बाप आते हैं। इस समय तुम भी कहेंगे हम क्या बन गये थे जो चाहिए सो कहो। हम ऐसे थे जरूर। भल है तो मनुष्य। परन्तु गुण और अवगुण तो होते हैं ना। इसलिये उन्हों की महिमा गाते हैं आप सर्वगुण सम्पन्न ... हम निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं। इतना बेअल बन पड़े हैं। इस समय सारी दुनिया निर्गुण है। अर्थात एक भी देवताई गुण नहीं है। बाप जो गुण सिखलाने वाला है उनको ही नहीं जानते हैं। इसलिये कहा जाता है विनाश काले विप्रीत बुधि। अभी विनाश तो होना ही है और नई दुनिया स्थापन होती है। इनको कहा जाता है विनाश काले। यह है अन्तिम विनाश। फिर आधा कल्प कोई लड़ाई आदि होती ही नहीं। मनुष्यों को कुछ भी पता नहीं हैं। विनाशकाले विप्रीत बुधि है तो जरूर पुरानी दुनिया का विनाश होगा। इसलिये पुरानी दुनिया में कितनी आपदाएं हैं। मरते ही रहते हैं। बाप इस समय की हालत बतलाते हैं। फर्क तो बहुत है ना। आज भारत का यह हाल है। कल भारत क्या होगा। आज यह है। कहां तुम होंगे। तुम बच्चे जानते हो यह बेहद दुनिया है। पहले नई दुनिया कितनी छोटी थी। वहां तो हीरे जवाहर होते थे। कितने हीरे जवाहर तुम्हारे महलों में होंगे। भक्ति मार्ग मे तुम्हारा मंदिर भी कोई कम थोड़ेही होता है। इसने ही फिर मस्जिदों आदि मे ले गये हैं। सिर्फ कोई एक सोमनाथ का मंदिर थोड़ेही होगा। एक भाति बनाऊंगा उनको देखकर और भी बनावेंगे। एक सोमनाथ मंदिर से ही कितना लूटा है। फिर बैठ अपना यादगार बनाया है। तो दिवारों मे पत्थरों मे लगाते हैं। इन पत्थरों की क्या वैल्यु होगी। इतनी जरी हीरे का भी कितना दाम है। बाबा जवाहरी था एक रती का हीरा होता था? 90 रुपये रती। अभी तो किमत है हजारों रुपया। मिलती भी नहीं। बहुत वस्तु बढ़ गई है। इस समय विलायत आदि तरक्कियन बहुत हैं। सतयुग के आगे तो यह कुछ भी नहीं। अभी बाप कहते हैं विनाश काले विप्रीत बुधि। बाकी आठ वर्ष है तो मनुष्य हंसते हैं। बाप कहते हैं मैं कितना समय बैठा रहूंगा। मुझे कोई यहां भजा आता है क्या। मै तो न सुखी न दुःखी होता हूं। मेरे ऊपर डियुटी है पावन बनाने की। तुम यह थे सो अभी यह बन गये हो। फिर तुमको ऐसा ऊंच बनाता हूं। तुम जानते हो हम फिर वह बनने वाले हैं। अभी तुमको यह समझ मे आई है हम इस देवीघराणे के भाति राजाई थी। फिर और2 आने लगे। अभी यह चक्र पूरा होता है। अभी तुम समझते हो लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं। यह लड़ाई है ही विनाश की। उस तरफ तो बहुत आराम से मरेंगे। कोई तकलीफ ही नहीं होगी। कौन बैठ क्या करेंगे और पिनी पहनेंगे। वहां तो यह रसम ही नहीं। उन्हों का मौत सहज है। यहां तो दुःखी हो मरते हैं। क्योंकि तुमने सुख बहुत देखा है। तो दुःख भी तुमको देखना है। रक्त की नदियां यहां बहेंगी। हिन्दु मुसलमान इकट्ठे रहे हुये हैं। वहां दिन प्रति दिन सस्ती होती जावेगी। फिर हाथ खाली आना पड़ेगा। भागना भी मुश्किल हो जावेगा। 10 हजार लाख रुपया दे तब मुश्किल से टिकेट मिले। वह समझते हैं यह लड़ाई फिर शान्त हो जावेगी परन्तु शान्त तो होनी नहीं हैं। भिरवा मौत भलुका शिकार। तुम देवता बनते हो तो कलियुगी पतित सृष्टि पर आ नहीं सकते हो। गीता में भी है भगवानुवाच विनाश भी देखो स्थापना भी देखो। सा0 हुआ ना। यह सभी सा0 अन्त मे होंगे। फलाने2 यह बनते हैं। फिर उस समय रोवेंगे बहुत बहुत पछतावेंगे। सजा खावेंगे। कर ही क्या सकेंगे। यह तो 21 जन्मों की लाटरी है। फिर बहुत पछतावेंगे, नसीब कुटेंगे। स्मृति तो आती है ना। सा0 विघ्न किसको सजा मिल नहीं सकता। सभा बैठती है। तामर मोर घ्वज की कथा भी है ना। सभी को सा0 होता जावेगा। अभी तो बड़ी आफत आनी है। तुम जीते रहेंगे। तुमको खुशी में रखने लिये ---

सा0 कराते रहेंगे। तुमको रंज होने का तो है नहीं। कर्मातीत अवस्था को पा लेंगे। तो अभी विपरीत और प्रीत को समझते हो। तुम नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बाप को कितना प्यार करते हो। वह विप्रीत बुधि तो कह देते हैं कुत्ते बिल्ले गदहे सभी में परमात्मा है। बाप कहते हैं मैं तुमको कल्प2 आकर पढ़ता हूं। यह बाप भी है टीचर भी है गुरु भी है। और कोई तो हो नहीं सकता। परन्तु यह भी बच्चे भूल जाते हैं। अहंकार आ जाता है। अभी बाप ने मुरली चलाई यह है आत्मा का भोजन। अभी फिर तुमको टोली खिलाते हैं। वह है शरीर का भोजन। वह सिर्फ आत्मा का भोजन। यह आत्मा का भी तो शरीर का भी है। आत्मा को टेस्ट आती है यह मीठा अच्छा है यह करवा है। आत्मा में ही अच्छे वा बुरे संस्कार रहते हैं। बाप भी आत्माओं को पढ़ाते हैं। अपने को आत्मा समझना इसमें ही बहुत मेहनत है? इस एक जन्म में ही इम्तहान पास करना है और बहुतप्रेम से बाप को याद करना है। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यारगुडमार्निंग।

24-12-68 की मुरली की रही हुई पायन्टस :-

बाप भाई2पने का डोज बहुत चढ़ाते हैं। परन्तु इतना असर नहीं रहता। बाहर में रहने वालों को तो घर आदि का भी फुर्सत रहता है। यहां तो बाप बैठा है। बाप कहते हैं मैं तुमको नयनों पर बिठाकर ले जाऊंगा। तुम्हारा नाम ही है नूर रत्न। फिर बाप कहते हैं साहबजादे। अर्थ तो पूरा है ना। साहब के हम बच्चे और बच्चियां हैं। बाप बैठ श्रृंगार करते हैं। तुम खुद भी कहते हो हम साहबजादे साहबजादियां बनेंगे। और तो कोई बना न सके। तो यह सुमिरण करना है। सुमिरण कर अति ईन्द्रियसुख को पाना है। यह दादा भी कहते हैं मैं बहुत खुशी में रहता हूं। 2।जन्म लिये अति ईन्द्रियसुख मिलता है। और भी जास्ती सुख रहता है। यहां तुम आते हो रिफ्रेश होने लिये। बाबा से डोज लेने। बड़ा मजा आता है। अच्छा ही रिफ्रेश होकर जाते हैं। फिर बाहर जाने से कितना घोटाला हो जाता है। जैसे कि जंगल में चले जाते हैं। यह भी ड्रामा की नुंध है। तुम्हारे ऊपर तो गुण्डों की नजर भी न पड़े। सतयुग में गुण्डे होते ही नहीं। यहां का वायुमंडल बहुत खराब है। दुनिया दिन प्रति दिन गंदी होती जाती है। कोई देखे भी नहीं। तो अन्दर ही पर्दे नसीन रहे। जैसे छिपाकर कपड़े पहनाकर ले जाते हैं। बाप भी कहते हैं तुमको छिपाकर घर ले जाऊंगा। कोई की नजर भी न पड़े। ऐसे2 अन्दर में विचार करो तो तुमको बड़ा मजा आवेगा। कोई बुगले की नजर भी न पड़े। वह बगुले हैं भार डालने वाले। तुम हंस मोती चुगने वाले हो। यह नशा चढ़ता है फिर ढीला हो जाता है। सारा दिन यही याद रहे बाबा बाबा बादशाही बाबा बादशाही। जैसे वह नशे में कहते हैं ना अमल अमल, शराब शराब भूत भूत भूत। किसम2 के नशे होते हैं। तुमको तो बेहद के बाप को बहुत याद करना चाहिए। इसी ही खुशी में रहकर औरों को भी ज्ञानअमृत पिलाना है। हर्षित मुख से। मुखड़ा सदैव खिला हुआ होना चाहिए। मुरझाया हुआ मुख न होना चाहिए। तुमको ऐसा हर्षित रहना है। ज्ञान को सुमिरण कर बहुत आनन्द आता है। तो वह चेहरा होना चाहिए ना। भगवान आज्ञा देते हैं तो वह सिर पर रखना चाहिए। यह तो एडयुकेशन मिनिस्टर्स आदि हैं। वह है जिस्मानी नालेज। यह भी एडयुकेशन है ना। यह जो भी डिपार्टमेन्ट है वह सभी बाप के पास हैं। जो भी डिपार्टमेन्ट के मिनिस्टर्स आदि हैं उन सभी डिपार्टमेन्ट का तन्त्र बाप के पास है। बाप है सेक्रीन। यह जो भी रूहानी2 मिनिस्टर्स आदि हैं सभी बाप के चीज में बंधे हुये हैं। अभी तुम ऐसे बाप के बच्चे बने हो। तो तुमको बहुत खुशी होनी चाहिए। शिव बाबा का बनने से कोई भी कभी भूखा नहीं मर सकता। अच्छा।

सूचना:- जयपुर तिलक नगर निर्मला बहन का सेन्टर चेंज हुआ है जिसकी एड्रेस भेज रहे हैं :-

BRAHMA KUMARIS
312, Near Bhag singh Chauraha
ADRASH NAGAR
JAIPUR --4